प्राचीन विरासत का संरक्षण

चार्लीन पोर्टर

नेशनल पार्क सर्विस भव्य प्राकृतिक दृश्यों के साथ ही अमेरिका के प्राचीन जनजीवन से जुड़ी यादगारों को बचाए रखने में अहम भूमिका अदा कर रही है।

एडी ग्रीन अकुमुलस © ए.ए. डिजाइन डैकाइव से

बाएं: न्यू मेक्सिको स्थित बेंडेलियर राष्ट्रीय स्मारक में पर्यटक।
दाएं: कोलोरैडो स्थित मेसा वर्द राष्ट्रीय पार्क में बलुआ पत्थर से बनी खड़ी चट्टानों के बीच स्थित प्राचीन रिहायशी परिसर में पर्यटक।

थेब्स के प्राचीन ईजिप्ट से

नेशनल पार्क सर्विस प्राचीन स्मारकों का संरक्षण करती है, इसकी तैयारी करती है कि लोग इन स्मारकों को निहार सकें, और इस सिलसिले में चलने वाली गतिविधियों से जुड़ी जानकारियों को दूसरे देशों के साथ भी साझा करती है।

भव्य प्राकृतिक भूदृश्य अमेरिका के नेशनल पार्कों की विशेषता है। लेकिन इसके लगभग 340 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में प्रागैतिहासिक स्थल भी शामिल हैं। ये स्थल उन लोगों की याद दिलाते हैं जो यूरोप के प्रवासियों द्वारा एक नए देश की खोज की घोषणा और नए राष्ट्र की स्थापना से भी पहले से इस भूमि पर रहते थे।

नेशनल पार्क सर्विस आज की मूलवासी अमेरिकी जनजातियों के पुरखों द्वारा रची कलावस्तुओं और स्थापत्य को भी उतना ही बहुमूल्य मानती है जितना कि प्रकृति के सिरजे विस्तृत भूदृश्यों और उन ऐतिहासिक स्थलों को जहां अमेरिका के संस्थापकों ने एक उपनिवेश को एक राष्ट्र में बदलने की योजना गढ़ी।

अमेरिकी कांग्रेस ने 1906 में पुरातत्वीय स्थलों को भविष्य के लिए संरक्षित करने की एक राष्ट्रीय नीति लागू की। असल में तो एंटिक्विटीज़ एक्ट नाम का यह अधिनियम 1916 के उस कानून से भी पहले का है जिसने पार्कों, स्मारकों और अन्य स्थलों के प्रबन्धन को नेशनल पार्क सर्विस के अंतर्गत एकीकृत किया। नेशनल पार्क सर्विस के मुख्य पुरातत्वविद फ्रांसिस पी.मैक्मैनामॅन कहते हैं कि एंटिक्विटीज़ एक्ट ने इस विचार को कानून में बदल डाला कि ''उन पुरातत्वीय संसाधनों और ऐतिहासिक स्थलों का संरक्षण किया जाना चाहिए और धन लाभ के लिए या निजी सनक या वहां कुछ और बनवाने के लिए इनसे छेड़छाड़ नहीं की जानी चाहिए।''

इस कानून को पारित करने का दबाव इसके लागू किए जाने से करीब दो दशक पहले से, तब से बन रहा था जब प्रवासियों ने अमेरिका के दक्षिण-पूर्व में बसना शुरू किया। सैकड़ों बरस पहले अमेरिकन इंडियनों की बनाई कच्ची ईंटों की इमारतें और मुहल्ले इस पूरे क्षेत्र में बिखरे थे। कुछ लोगों ने इन्हें एक पुरानी सभ्यता की कलावस्तुओं के रूप में देखा लेकिन कुछ लोगों को तो ये बस इस्तेमाल किए जाने लायक या बेचे जाने लायक सामानों की खदानें ही दिखीं।

20वीं सदी के आरम्भ में औपनिवेशिक या संघीय सरकार और उत्तरी अमेरिका के मूलवासी कबीलों के बीच (इंडियन वार्स) हुए युद्धों की याद बहुत ताज़ा थी और मूलवासी कबीलों के साथ भेदभाव आम था। ई-जर्नल यूएसए से एक साक्षात्कार में फ्रांसिस पी. मैक्मैनामॅन ने बताया कि इन तथ्यों और एंटिक्विटीज़ एक्ट के पारित होने का संयोग ''कमाल का'' है। ''एक ओर इन प्राचीन स्मारकों और खंडहरों के संरक्षण के प्रयास चल रहे थे और दूसरी ओर इस विरासत के दावेदारों को बड़े करीने से उनकी संस्कृति के अवशेषों से वंचित किया जा रहा था।'' उस दौर में जनजातीय समूहों को उनकी परम्परागत भूमि से और इंडियन विरासत को बच्चों की शिक्षा से बाहर करने की सरकारी नीतियां आम थीं।

पार्कों में पुरातत्व

आज नेशनल पार्क सर्विस अपने द्वारा प्रबंधित स्मारकों और पार्कों में करीब 70 हज़ार पुरातत्वीय स्थल दर्ज़ कर चुकी है और मैक्मैनामॅन का अंदाज़ा है कि अभी लाखों और स्थल अपने को दर्ज़ किए जाने का इंतज़ार कर रहे हैं। हज़ारों -लाखों बरस पुराने स्मारकों का संरक्षण अपने आप में चुनौती भरा काम है, ऊपर से नेशनल पार्क सर्विस को जनता को उन्हें देखने, समझने देने के अपने उद्देश्य का भी ध्यान रखना होता है।

खड़ी चोटियों पर बने गांवों और मुहल्लों के ढांचों के बारे में मैक्मैनामॅन कहते हैं कि ''हमें पत्थर और कच्ची ईंटों की कुछ दीवारों को स्थिर करना होगा ताकि मूल ढांचे को क्षति न पहुंचे।'' इस काम के लिए संरक्षणविदों को मूल निर्माताओं द्वारा इस्तेमाल किए गारों के जैसे ही मिट्टी आधारित गारे पलस्तर तैयार करके कच्ची ईंटों के ढांचों की मूल इमारतों का संरक्षण करना होगा।

यह चुनौती अमेरिका के ही नहीं अन्य देशों के संरक्षणविदों के भी सामने है। मैक्मैनामॅन और सहयोगियों टैरी चाइल्ड्स और बारबरा लिट्स को अपने व्यवसाय की साझी समस्याओं की व्यापकता की जानकारी 2007 में तब हुई जब अफ़गान स्मारक निदेशकों का एक समूह पुरातात्विक और ऐतिहासिक स्थलों के प्रबन्धन के नेशनल पार्क सर्विस के तौरतरीकों पर नज़र डालने के लिए अमेरिका आया।

अमेरिका के बहुत से ऐतिहासिक स्मारकों की ही तरह अफ़गानिस्तान के स्मारक भी बलुआ पत्थर, ग्रेनाइट या कच्ची मिट्टी के बने होते हैं। मैक्मैनामॅन बताते हैं कि अफ़गान दल स्मारकों के स्थिरीकरण के लिए सही सामग्री के चुनाव में निहित वैज्ञानिक सिद्धांतों पर चर्चा करना चाहते थे।

मैक्मैनामॅन को आशा है कि सूचना के इस आदान-प्रदान के फलस्वरूप अफ़गान स्मारक निदेशकों को अमेरिका में हुई गलतियों सें बच पाने में मदद मिलेगी। वह बताते हैं, ''हम बीसवीं सदी के शुरुआती दौर में किए गए जीर्णोद्धार में से गलत किस्म का गारा निकाल रहे हैं। उसकी जगह हम मिट्टी आधारित गारे पलस्तर लगा रहे हैं जो नरम हैं और मूल कच्ची ईंटों और पत्थरों को संरक्षित कर पाएंगे। हमारे अफ़गान मित्रों ने इस काम में काफी रुचि ली।''

ज़्यादा जानकारी के लिए:

नेशनल पार्क सर्विस

http://www.nps.gov/

अमेरिका के राष्ट्रीय स्मारक

http://www.roadtripamerica.com/rv/Visiting-National-Monuments.htm

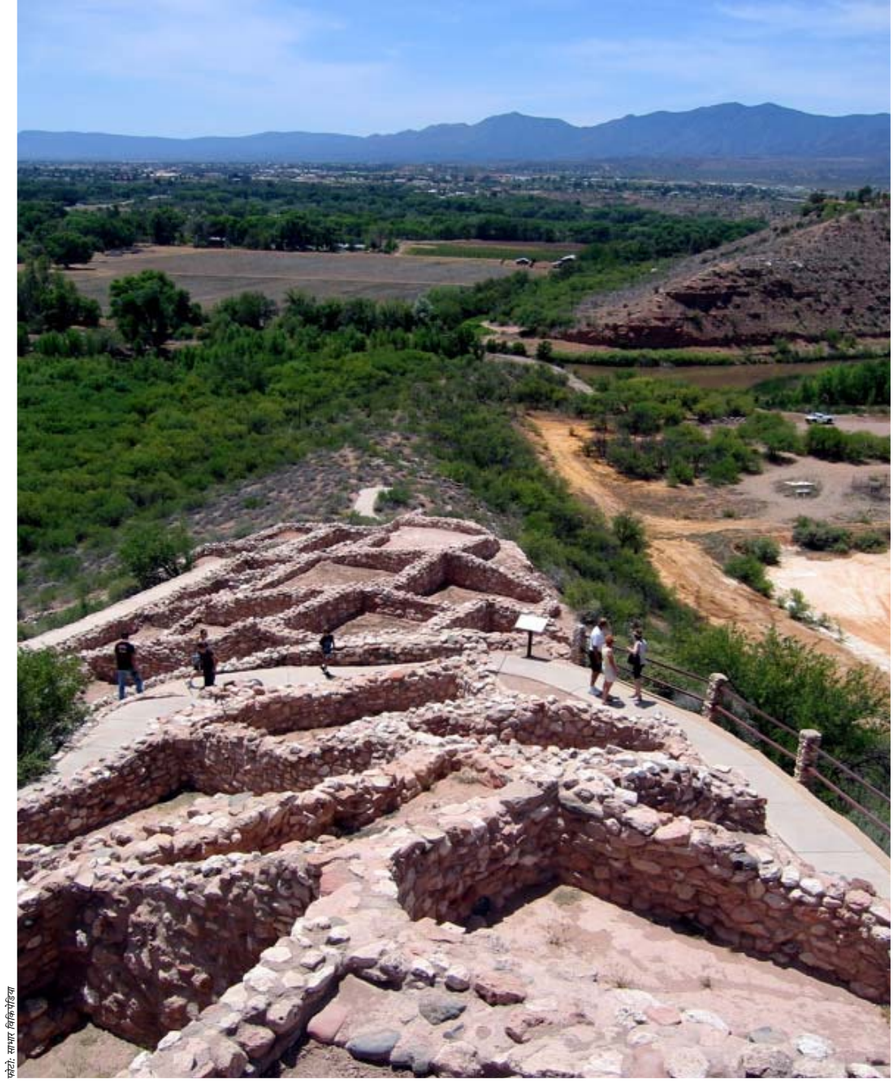

फोटो: साभार विकिमीडिया

फोटो: साभार विकिमीडिया

फोटो: यू.एस.डी.ए. फॉरेस्ट सर्विस

दाएं ऊपर: चिलिकॉथे, ओहायो स्थित होपवेल कल्चर राष्ट्रीय ऐतिहासिक पार्क के माउंड सिटी स्थल में मौजूद इंडियन माउंड (प्राचीन खंडहरों के संरक्षण के लिए किया गया निर्माण)। दाएं नीचे: न्यू मेक्सिको के चाको कल्चर राष्ट्रीय ऐतिहासिक पार्क में चाको कैन्यन खंडहरों का संरक्षण।

दाएं नीचे: न्यू मेक्सिको के चाको कल्चर राष्ट्रीय ऐतिहासिक पार्क में चाको कैन्यन खंडहरों का संरक्षण।

सामुदायिक शिक्षा

अफगान पुरातत्वविदों ने वाशिंगटन के ऐतिहासिक स्थलों को देखा और अमेरिकी विदेश विभाग के कल्चरल हेरिटेज़ सेंटर द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत दक्षिण-पश्चिम में नेशनल पार्क सर्विस के साथ आठ सप्ताह कार्य किया। अफ़गानिस्तान में सांस्कृतिक संरक्षण में सहायता के प्रयासों के हिस्से के तौर पर इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को सामुदायिक सम्बन्धों और सार्वजनिक शिक्षा के बारे में परामर्श भी दिया गया।

नेशनल पार्क सर्विस के लगभग 400 पार्क, स्मारक और स्थल बहुत ही विविध समुदायों के बीच स्थित हैं और बरसों के अनुभव से अधिकारियों ने समझ लिया है कि पार्क और सामुदायिक अधिकारियों के बीच गहरे और सहयोगपूर्ण सम्बन्ध स्थल-प्रबन्धन का महत्वपूर्ण अंग हैं।

शिक्षा इस सम्बन्ध का एक और तत्व है और पार्क कर्मचारी समुदाय के स्कूली बच्चों और अन्य समूहों को अपने कार्यक्षेत्र दिखाने के हर अवसर का उपयोग करते हैं। मैक्मैनामॅन बताते हैं कि अफ़गान प्रशिक्षुओं को यह नई और अनोखी बात लगी। ''उन्होंने देखा कि स्कूली बच्चों के दल पार्क रेंजरों के मार्गदर्शन में 17वीं सदी के उत्तरार्ध में एरिज़ोना में स्थापित स्पेनिश मिशन तुमकैकॉरी के आंगनों में घूम रहे थे। उन्हें लगा कि बामियान घाटी में भी ऐसे ही शैक्षणिक कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं।'' यहां की विशाल बुद्ध प्रतिमाएं हालांकि तालिबानियों ने 2001 में ध्वस्त कर दी थीं लेकिन बामियान घाटी उत्तरी अफ़गानिस्तान से गुजरते रेशम मार्ग पर एक महत्वपूर्ण स्थल और अंतरराष्ट्रीय रूप से स्वीकृत सांस्कृतिक स्थल है।

मैक्मैनामॅन मानते हैं कि बामियान से एरिज़ोना तक बिखरे ऐतिहासिक स्थल हर पीढ़ी में अतीत की समझदारी तैयार करने के महत्वपूर्ण उपकरण हैं। अगर युवाओं और किशोरों को अतीत से जुड़े इन स्थलों और वहां घटी घटनाओं से परिचित करवाया जाए तो उनमें अतीत को लेकर एक परिचय का भाव विकसित होगा।

यह लेख अमेरिकी विदेश विभाग के ब्यूरो ऑफ़ इंटरनेशनल इनफॉरमेशन प्रोग्राम द्वारा तैयार किया गया है। वेबसाइट: http://www.america.gov